बी अवेयर आजकल लक्षित थैरेपी देने के लिए भी कुछ जीन टेस्ट होते हैं। लक्षित थैरेपी से साइड इफेक्ट कम होते हैं।

कैंसर में कारगर टारगेटेड थैरेपी

डॉ. दीपक गुप्ता
कैंसर स्पेशलिस्ट, जयपुर

कैंसर कोई एक तरह का रोग नहीं है। कैंसर अलग-अलग तरह के एवं अलग-अलग अंगों के अनुसार वर्गीकृत हैं। यह रोग किसी भी अंग व आयु में हो सकता है। यह रोग तो भयानक है ही किन्तु इस रोग के बारे में जनमानस में बहुत सी भ्रांतियां हैं, जो कि अधिक खतरनाक हैं और कैंसर के सफल उपचार व नियंत्रण में बाधक हैं।

सामान्यतः शरीर की कोशिकाएं नियमित रूप से विभाजित होती हैं व अपनी आयु पूरी होने पर वे नष्ट भी होती रहती हैं जिससे शरीर में समस्थिति बनी रहती है। लेकिन जब इस व्यवस्था प्रणाली का नियंत्रण खत्म हो जाता है तो कोशिकाएं अव्यवस्थित रूप से विभाजित होना शुरू कर देती हैं और ये नष्ट भी नहीं होतीं। यही कोशिकाएं धीरे-धीरे ट्यूमर (गांठ) का निर्माण करती हैं।

रोग की वजह

आम धारणा के अनुसार कैंसर सिर्फ आनुवांशिक रोग है लेकिन ऐसा नहीं है। लगभग 10 प्रतिशत कैंसर के रोग ही आनुवांशिक होते हैं शेष रोग अन्य कारणों की वजह से होते हैं। जिनमें धूम्रपान, अत्यधिक शराब पीना, गुटखा या तंबाकू की लत, मोटापा, व्यायाम न करना, अधिक धूप में रहना, कुछ वायरल संक्रमण (जैसे कि ह्यूमन पेपिलोमा वायरस, एचआईवी, हेपेटाइटिस), जल और वायु प्रदूषण आदि मुख्य हैं।

सामान्य लक्षण

वैसे तो कैंसर के कोई स्पष्ट लक्षण नहीं होते जिन्हें देखकर इस रोग का पता लगाया जा सके लेकिन कुछ सामान्य लक्षण हैं जो किसी भी तरह के कैंसर में हो सकते हैं। यदि इस तरह के कुछ लक्षण नजर आते हैं तो आप अपने फैमिली फिजिशियन से संपर्क करें।

अत्याधिक थकान। अकारण वजन गिरना।
भूख न लगना।
बुखार, कंपकपी या रात में पसीना आना।
शरीर के किसी अंग में दर्द होना।
लंबी खांसी, सांस फूलना या बलगम में खून।
मल या मूत्र के साथ रक्तस्राव।
शरीर के किसी हिस्से में गांठ/घाव होना।

इलाज में प्रगति

पिछले कुछ वर्षों में कैंसर के इलाज में प्रगति हुई है। रोबोट द्वारा ऑपरेशन से जटिल सर्जरी भी सरलता से संभव है। कीमोथैरेपी के क्षेत्र में भी नई दवाइयों के आने से कैंसर के ठीक होने की संभावनाएं बढ़ गई हैं। जिनके दुष्प्रभाव भी कम होते हैं।

बचाव के उपाय

हालांकि इस रोग से पूरी तरह बचाव का कोई उपाय तो नहीं है लेकिन जीवनशैली में बदलाव कर कैंसर के जोखिम को कम किया जा सकता है।

धूम्रपान, शराब व गुटखा आदि से बचें।
नियमित व्यायाम करें और वजन को नियंत्रित रखें।
हरी सब्जियां, फल, दुग्ध उत्पादों का अधिक सेवन करें व मांस आदि से परहेज करें।
सीधी धूप से बचें।
हेपेटाइटिस-बी और ह्यूमन पेपिलोमा वायरस की वैक्सीन लगवाएं।
असुरक्षित यौन संबंध न बनाएं।
डॉक्टर की सलाह से साल में एक बार आवश्यक जांचें जरूर कराएं।

कैंसर स्क्रीनिंग

स्क्रीनिंग वह प्रक्रिया है जिसमें कुछ जांचों के द्वारा कैंसर का शुरुआती स्टेज में ही पता लगाकर इलाज आसानी से किया जा सकता है।

ब्रेस्ट कैंसरः मैमोग्राफी व डॉक्टरी जांच।
गर्भाशय ग्रीवा कैंसरः पैप स्मीयर टेस्ट।
बड़ी आंत का कैंसरः कोलोनो स्कोपी व स्टूल टेस्ट।
प्रोस्टेट कैंसरः ब्लड की जांचें और डॉक्टरी परीक्षण।

जांच व इलाज

कैंसर की गांठ की जांच सूई द्वारा उसका सैम्पल या गांठ का एक छोटा टुकड़ा लेकर की जाती है ताकि उसका प्रकार पता लग सके। इसके अलावा आजकल ब्रेस्ट, फेफड़े व लसिका ग्रंथि से जुड़े कैंसर का इलाज टारगेटेड थैरेपी से किया जाता है। इस थैरेपी में इस्तेमाल होने वाली नई दवाएं सीधे कैंसर की कोशिकाओं पर असर डालकर उन्हें निष्क्रिय कर देती हैं। इससे सामान्य कोशिकाएं प्रभावित नहीं होती और मरीज पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं होता। साथ ही पीड़ित का सर्वाइवल पीरियड भी 80 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

सर्जरीः इसमें कैंसर से प्रभावित अंग का हिस्सा या पूरे अंग को ही निकाल लिया जाता है। कैंसर की सर्जरी हमेशा कैंसर के सर्जन से ही करवानी चाहिए क्योंकि यदि इनका कुछ हिस्सा शरीर में ही छूट जाएगा तो आपको फिर से ऑपरेशन करवाना पड़ सकता है।

रेडियो व कीमोथैरेपी

रेडियो थैरेपी में किरणों द्वारा कैंसर की गांठ को जलाया जाता है या ऑपरेशन के बाद भी इसका उपयोग संभावित अवशेष को खत्म करने के लिए किया जा सकता है। वहीं कीमो थैरेपी में दवाइयों द्वारा कैंसर का इलाज किया जाता है। दवाइयां, गोली या इंजेक्शन के रूप में हो सकती है।

www.patrika.com/health